पंचायतों में जैव विविधता की पड़ताल करेंगे विद्यार्थी

जागरण संवाददाता, पटना : जैव विविधता प्रकृति का उपहार है। इसी से सृष्टि है, इसी से खुशियां। यह आने वाली पीढ़ियों के लिए सौगात है, जिसे संजोकर रखने की चुनौती भी। इसी को ध्यान में रखते हुए इसके प्रति गांव-गांव तक जागरूकता के लिए पंचायतों में जैव विविधता प्रबंध समिति का गठन किया गया। अब विज्ञान एवं पर्यावरण विषय से स्नातक कर छात्र-छात्राओं को इसके सत्यापन का दायित्व दिया गया है।

पंजी की जांच से संबंधित प्रशिक्षण में भाग लेते छात्र और छात्राएं। ● जागरण

गांव-गांव की कृषि हो या पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, मिट्टी, फसल, पंचायत स्तर पर जैव विविधता पंजी बनाई गई है। इससे उस क्षेत्र में इसके बारे में पता चल सकेगा। इसे अद्यतन करने के साथ ही 23 मई से चार जून के बीच सत्यापन भी किया जाएगा। बिहार की 8058 पंचायतों में 7890 में समिति का गठन हो चुका है। इनमें 400 पंचायतों की पंजी की जांच का दायित्व छात्र-छात्राओं को दिया गया है। बुधवार को चयनित छात्र-छात्राओं को पंजी की जांच से संबंधित प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण बिहार राज्य जैव विविधता पर्षद के सचिव डा. के गणेश, उप निदेशक सुनील कुमार सिन्हा और ज्योलाजिक सर्वे आफ इंडिया के बिहार प्रभारी डा. गोपाल शर्मा ने दिया। चयनित विद्यार्थी पंचायतों में जैव विविधता के अध्यक्ष, सदस्य एवं ग्रामीणों से मिलकर पंजी का सत्यापन करेंगे। वे उनके साथ फोटो भी लेंगे और जीओ टैगिंग कर भेजेंगे। पंजी पर अध्यक्ष, सदस्य सचिव के साथ उनका भी हस्ताक्षर होगा। प्रत्येक जिले के चयनित पंचायतों में पंजी का सत्यापन किया जाना है। पर्षद से सभी प्रशिक्षित विद्यार्थियों को पंजी की प्रति उपलब्ध कराई गई।

इन 31 बिंदुओं पर किया जाएगा अध्ययन

पलायन करने वाले लोगों की संख्या के साथ फसलीय पौधे, फलदार पौधे, चारे की फसलें, खर पतवार, फसलों के कीट, पालतू जानवरों के लिए बाजार, भूमि की स्थिति, जल दृश्य, मिट्टी के प्रकार, फलदार वृक्ष, औषधीय पौधे, सजावटी पौधे, इमारती लकड़ी के पौधे, पालतू जानवर, मत्स्य पालन, पालतू जनवर सहित अन्य तरह के बाजार व मेला, वन्य जैव विविधता (वृक्ष, झाड़ियां, जड़ी-बूटी, कंद, घास लताएं आदि), महत्वपूर्ण वन्य पौधों की प्रजातियां, जलीय जैव विविधता, महत्वपूर्ण जलीय वन्य पौधों की प्रजातियां, औषधीय उपयोग वाले वन्य पादप, फसलों के जंगली संबंधी, सजावटी पौधे, चबाने वाले पौधे, प्रकाष्ठीय पौधे, अन्य जंगली पौधे, वन्य प्राणी (स्तनधारी, पक्षी, सरीसृप, उभयचर, कीट अन्य), वनस्पतियां, जीव-जंतु और स्थानीय महत्व की अन्य सूचनाएं अध्ययन में शामिल हैं।